RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 48 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 5 मई 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

खीनापानी में यादगार आयोजन

लला जसुली की ऐतिहासिक धर्मशाला में जुटे

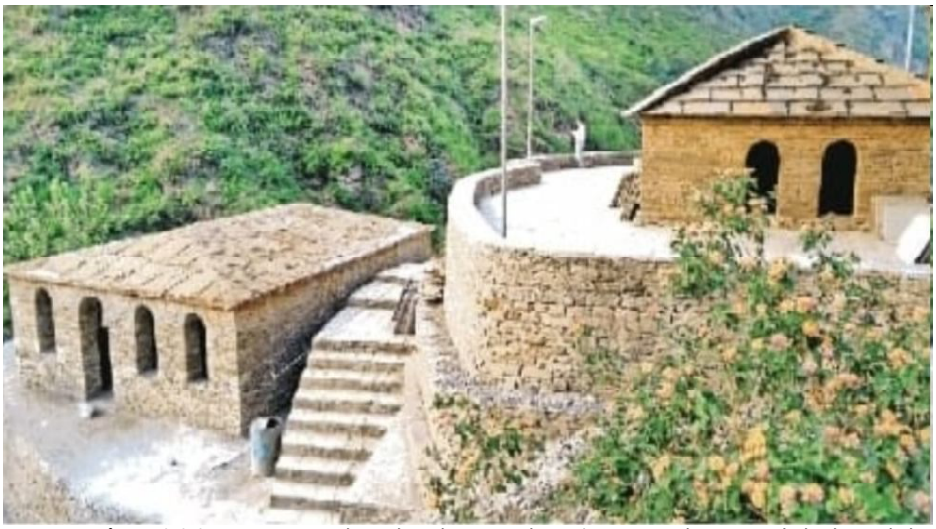

कार्यालय प्रतिनिधि

अल्मोड़ा। जसुली बूढ़ी सोक्यानी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धन समिति का प्रथम वार्षिकोत्सव सुयालबाड़ी के खीनापानी स्थित लला जसुली की ऐतिहासिक ध र्मशाला परिसर में मनाया गया। इस अवसर पर परम्परागत वेशभूषा में पधारे जसुली लला के वंशज व तमाम लोगों ने महान दानी वीरांगना अमा जसुली का स्मरण करते हुए खीनापानी में पहली बार हो रहे आयोजन के लिये समिति को बधाई दी। समिति के प्रमुख फली सिंह दताल सहित विभिन्न स्थानों से पधारे गणमान्य जनों ने 26 अप्रैल को ही यहाँ पहुँचकर उन पुरानी यादों को ताजा किया जब कभी उनके बुजुर्ग, मानसरोवर यात्री, हिमालयी यात्री, विद्यार्थी, चरवाहे अपनी यात्रा के दौरान इस प्रकार की धर्मशालाओं में रुकते थे। आभाव के उस दौर में लला जसुली ने कमिश्नर रैमजे की प्रेरणा से तिब्बत तक सैकड़ों धर्मशालाएं बनवाई। इन ऐतिहासिक धरोहरों को संवारने में शासन-प्रशासन के योगदान की समिति ने प्रशंसा करते हुए उस दौर की सभी धर्मशालाओं को संवारने का अनुरोध किया। समिति से जुड़े लोगों ने मुख्य आयोजन 27 अप्रैल को किया जिसमें स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने प्रतिभाग करते हुए हर प्रकार से सहयोग का आश्वासन दिया। आयोजन के बाद ग्रामीणों में उत्सा है।(अगले अंक में विस्तृत रिपोर्ट)

कैप्टन लच्छी चन्द से भेंटवार्ता

ईमानदार लोगों की दुनिया देखी है

डॉ. पंकज उप्रेती

जमाने को जितना खराब कहा जाता है, उतना है नहीं। नज़र अपनी-अपनी है। हमने तो ईमानदार लोगों की दुनिया देखी है। एक-दूसरे पर भरोसा ही आगे बढ़ने में मददगार होता है। यह उद्गार वयोवृद्ध कैप्टन लच्छी चन्द के हैं। आमबाग, टनकपुर में रहने वाले कैप्टन साहब अपने अतीत को याद करते हुए बताते हैं कि टनकपुर भाबर में मच्छरों की दहशत के कारण पहाड़ के लोग आना नहीं चाहते थे। 1947 पिथौरागढ़ से चार दिन की पैदल यात्रा कर पहली बार टनकपुर आए लच्छी चन्द जी बताते हैं बचपन में उन्हें ट्रेन देखने का सुर हुआ, उसी जिद में वह टनकपुर आए थे।

सीमेंट रोड में खुले में सोते थे यात्री

अस्कोट मार्ग से समूह में आते थे लोग

काली कुमाऊँ के नाम से ही भय था

खर्क देश में व्यापार चलता था

पिथौरागढ़ के बीसाबजेट में रहने वाले चन्द परिवार का टनकपुर से किस प्रकार वास्ता पड़ा इस पर कैप्टन साहब बताते हैं कि पिता स्व. श्रीचन्द 1947 में टनकपुर आ गये थे। माता स्व. रूपसी देवी के साथ मिलकर उन्होंने 45 बीघा भूमि आबाद की, जो आज की पीढ़ी को आश्चर्य लग सकता है। बिना साधनों के फावड़े के सहारे खेतों को तैयार कर डाला। उस समय के 4-5 पुराने परिवार आज भी आमबाग टनकपुर में रहते हैं। बांकी बसासत बाद की है। आने-जाने के संसाधन न होना और (शेष पृष्ठ 5 पर)

भारत के मीलपत्थर

सप्तर्षि जो हमारे दिलो-दिमाग पर छाए हुए हैं

सूर्यकान्त बाली

इसमें शक नहीं। इसमें शक नहीं कि सप्तर्षि यानी सात ऋषि (सप्त ऋषि) हमारे दिल और हमारे दिमाग पर छाये हुए हैं। बचपन में जैसे हम लोगों को चन्द्रमा में नहर आने वाले काले धब्बे को लेकर कई तरह की कहानियाँ सुनाई जाती हैं, ध्रुव तारे को लेकर कई तरह की बातें बताई जाती हैं, वैसे ही सप्त ऋषियों के बारे में भी कई तरह की गौरव गाथाएँ सुनाई जाती हैं। जहाँ आकाश में आकाशगंगा नजर आती है, वहाँ सप्तर्षियों का वास है, वे तारे जिन्हें सात की संख्या तक पहुँचाया जाता है वे ही वहाँ रहने वाले सात ऋषि हैं, इस तरह की अद्भुत बातें, कहानियाँ, गाथाएँ सुनकर हमारे देश के बच्चे बड़े होते हैं। जाहिर है कि हम लोगों के जहन में सप्तर्षि अमिट तरीके से अंकित हैं और उनके प्रति हमारे मन में अगर कोई भाव है तो सिर्फ सम्मान का है, श्रद्धा का है।

पर इसमें भी कोई शक नहीं कि हम नहीं जानते कि ये सात ऋषि हैं कौन और क्यों इनको इस कदर सम्मान का और श्रद्धा का पात्र बना दिया गया कि सातवें आसमान पर तारों के बीच हमेशा के लिए, कभी नष्ट न होने के लिए बिठा दिया गया? इन सात ऋषियों के बारे में बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम अभी हम एक एक कर बताएंगे। पर इनके बारे में सबसे ज्यादा गड़बड़ परम्परा यह चला दी जाती है कि ये ब्राह्मण कुलों के प्रवर्तक थे, और जब ब्राह्मणकुलों के कथित प्रवर्तकों के नाम गिनवाने की बात आती है तो ब्राह्मण कहे जाने वाला हर भारतीय सबसे पहले अपने कुल और उसके ठीक या गलत प्रवर्तक का नाम गिनवा देता है और फिर उसके बाद कोई भी छह मशहूर नाम, मसलन दुर्वासा का या परशुराम का या मार्कण्डेय का नाम गिनवा देता है। सामने कोई दूसरा ब्राह्मण जाति वाला बैठा हुआ तो और उसके कुल प्रवर्तक का, मसलन किसी कश्यप का, या किसी कौशिक का या किसी पाराशर का नाम न गिनवा सका हो तो क्षमायाचना पूर्वक कह देगा कि फलाँ-फलाँ कारणों से आपके कुल प्रवर्तक सप्तर्षियों की गिनती में नहीं आ पाए।

जिसके प्रति इतना सम्मान हो, इतनी श्रद्धा हो पर उसके बारे में ठीक-ठीक पता न हो, पता लगाने की कोशिश भी अब बन्द कर दी गई हो, इसका कोई दूसरा उदाहरण कभी मिलेगा तो बताएंगे। पर फिलहाल इसमें यह बात जोड़नी जरूरी लग रही है कि इन सप्तर्षियों के नामों के साथ यह लिबर्टी, यह रियायत हजारों सालों से ली जा रही है। जैसे महाभारत में सप्तर्षियों की दो नामावलियां मिलती हैं। एक नामावली में कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ के नाम आते हैं तो दूसरी नामवली में 5 नाम बदल जाते हैं। कश्यप और वसिष्ठ वहीं रहते हैं पर बाकी के बदले मरीचि, अँगिरस, पुलस्त्य और क्रतु नाम आ जाते हैं। कुछ पुराणों में कश्यक और कण्व को पर्यायवाची माना गया है। इसके अलावा एक धारणा यह भी है कि चारों दिशाओं के अलग अलग सप्तर्षि हैं और इस प्रकार अट्ठाइस ऋषियों के नाम मिल जाते हैं। बल्कि पुराणों में तो मामला इस दह तक खिंच गया है कि चौदह मन्वन्तरों के (जिसकी चर्चा मनु के सन्दर्भ में हम पहले एक बार कर चुके हैं) अलग-अलग सप्तर्षि माने गए हैं और संख्या कुल 28 तक चली जाती है। और वहाँ भी तुर्रा यह कि नामों में कई बार बदलाव हो जाता है। नहुष ने जिन सप्तर्षियों को अपनी आपको ढोने का काम में लगाया था उनमें अगस्त्य भी एक थे जिनके बारे में विवाद लगातार रहा है कि वे सप्तर्षि हैं या नहीं।

तो कैसे बात बनेगी? सप्तर्षियों के नामों के बारे में बेशक इस कदर विविधता रही हो, पर जैसे यह तय है कि हमारे हृदय में उनके प्रति अपार सम्मान और श्रद्धा बसी है वैसे ही दो बातें और भी तय हैं। एक, कि अपने देश में कोई न कोई वक्त ऐसा था जब सप्तर्षि शब्द बेशक प्रचलित न हुआ हो पर कोई सात ऋषिकुल ऐसे थे जो शेष ऋषिकुलों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण थे और दो, कि ये सात ऋषिकुल ऐसे थे जिन्होंने देश की सभ्यता के विकास में,

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

आतंकी किसी के नहीं होते

कश्मीर के पहलगाव शहर के निकट 'मिनी स्विट्जरलैंड' के नाम से प्रसिद्ध पर्यटक स्थल बायसरन में आतंकियों द्वारा 26 पर्यटकों की निर्मम हत्या से पूरा देश अभी तक सदमे में है और आतंकियों व उनके संरक्षक को जड़ से उखाड़ने के लिये गुस्सा दिखाया है। 22 अप्रैल 2025 की दोपहर को आतंकियों ने जिस प्रकार का वीभत्स हत्याकाण्ड किया वह पूरी दुनिया को दहलाने वाला है। उन दरिन्दों ने धर्म-जाति पूछकर लोगों को मौत के घाट उतारा और दुनिया में शैतानी कारनामों का नंगा नाच किया।

2019 में पुलवामा में हुए आतंकी हमले के बाद जम्मू-कश्मीर में यह सबसे बड़ा आतंकी हमला है। दोपहर करीब तीन बजे बायसरन घाटी के घास के मैदान में आतंकी घुस आए और खाने-पीने की दुकानों के आसपास घूम रहे पर्यटकों पर ताबड़तोड़ गोलीबारी कर दी। इस कायराना हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े गुट द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) ने ली। बताते हैं कि इस आतंकी गुट का मास्टर माइंड लश्कर ए तैयबा का डिप्टी चीफ सैफुल्लाह खालिद है, जिसका रुतबा पाकिस्तानी सेना में भी है। सीधी सी बात है कि जब इसका इतना दबदबा है तो पाकिस्तान सेना का आतंकी संगठन को सीधा सा संरक्षण है।

पाकिस्तान को यह नहीं भूलना चाहिये आतंकी किसी के नहीं होते। लेकिन पाकिस्तान में बेरहम लोगों की भीड़ जुटाई जाती रही है। जबकि कितने ही आतंकी हमले पाकिस्तान स्वयं भी झेल रहा है। आतंक के साये में पाकिस्तान की आम जनता जितना घुट रही है, उसे यह दरिन्दे नहीं समझ रहे हैं। इसी कट्टरता के कारण पाकिस्तान की ओर से बार-बार सीमा पर वातावरण खराब किया जा रहा है।

पहलगाव में भीषण आतंकी हमले में जिस प्रकार से धर्म-जाति का नाम लेकर भड़काने का काम किया गया है उसे भी लोग समझ रहे हैं। यही कारण है कि अलगाव की बात करने वाले लोगों ने भी जम्मू-कश्मीर में आतंकियों के खिलाफ जबर्दस्त प्रदर्शन किया। हमें यह भी याद रखना चाहिये कि हमले के समय पर्यटकों को बचाने के लिये आतंकियों से अकेला भिड़ने वाला तीस वर्षीय कश्मीरी युवक सैय्यद आदिल हुसैन भी अपनी जान गंवा बैठा।

इस पूरी आतंकी घटना की जड़ों को समाप्त करना जरूरी है। इसके लिये देश के भीतर और बाहर दोनों ओर लक्ष्य भेदना होगा।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

नवीनीकरण ऊर्जा से संचालित शहर अमरावती

अमरावती। आन्ध्र प्रदेश की नई बनने वाली राजधानी अमरावती इतिहास बनाने जा रही है क्योंकि इसका लक्ष्य पूरी तरह से नवीकरणीय ऊर्जा से चलने वाला दुनिया का पहला शहर बनने का है। शहर के योजनाकार एक अत्याधुनिक लेकिन पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल राजधानी बनाने की योजना बना रहे हैं।

एवरेस्ट पर चढ़ अपना ही रिकार्ड तोडेंगे शेरपा

काठमाण्डू। दुनिया के सबसे प्रख्यात पर्वतारोहण मार्गदर्शकों में शामिल एक गाइड 31वीं बार विश्व की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ने का प्रयास करेंगे और सम्भवत: वह 32वीं बार भी ऐसा करें और अपना ही रिकार्ड तोड़ेंगे। कामी रीता (55) इसके लिये रवाना हो चुके हैं।

रणीनीतिक मुद्दों पर काम करेंगे भारत-इजराइल

यरुशलम। इजराइल के राष्ट्रपति इसहाक हर्जोग ने विशेष रूप से भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारा (आईएमईसी) परियोजना पर जोर देते हुए भारत से भू-रणनीतिक मुद्दों पर मिलकर काम करके द्विपक्षीय सम्बन्धों को और गहरा करने का आग्रह किया। हर्जोग ने इस परियाजना को दुनिया का भविष्य बताया।

श्याम बेनेगल को दी जाएगी श्रद्धांजलि

न्यूयॉर्क। महान भारतीय फिल्म निर्माता श्याम बेनेगल की विरासत को न्यूयॉर्क इण्डियन फिल्म फेस्टिवल के रजत जयन्ती आयोजन में सम्मानित किया जायेगा। साथ ही भारतीय स्वतन्त्र सिनेमा को समर्पित सबसे लम्बे समय से चलने वाला और प्रतिष्ठित अमेरिका महोत्सव 20-22 जून में बेनेगल को यह बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

नेपाल के शिक्षा मंत्री का इस्तीफा

काठमाण्डू। नेपाल शिक्षा मंत्री विद्या भट्टाचार्य ने इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने यह कदम ऐसे समय में उठाया जब हजारों शिक्षक स्कूल शिक्षा विधेयक पारित करने की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। शिक्षा मंत्री और प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के साथ राजनीतिक मतभेद भी बताए जा रहे हैं।

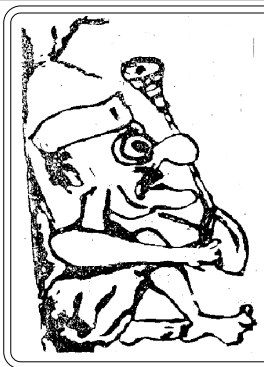

फसक

दाज्यू, जांच-पड़ताल होते रहने वाली ठैरी

निपटारा करने के लिये सबकुछ होता रहता है बल

दाज्यू, मुख्यमंत्री ने पौड़ी जिले के घुड़दौड़ी स्थित जीबी पन्त इन्जीनियरिंग कालेज में नियुक्तियों, प्रमोशन और अन्य मामलों में गड़बड़ी की शिकायत पर विस्तृत जाँच के आदेश दिये हैं। इसके लिये नए सिरे से एसआईटी गठित करने के निर्देश हैं।

दाज्यू, पाटी विकास खण्ड की दुबड़ साधन सहकारी समिति में 81.08 लाख रुपये के गबन की पुष्टि हुई है। समिति के तत्कालीन सचिव ने 2010 से 2024 के बीच गबन को अंजाम दिया बल। जांच समिति ने गड़बड़ी पकड़ी तो अब वूसली का नोटिस जारी हुआ है।

जाँच-पड़ताल होते रहने वाली ठैरी। कितने ही मामले मर-खप चुके हैं। पटरी पार वाले कालेज में प्रोफेसर जैकब का कहना है- 'जाँच होती रहती हैं, मेरी कई हो चुकी है। इससे कुछ नहीं होता। प्रॉपर जाँच के लिये मेरे पास एक सप्ताह पहले नोटिस आना चाहिये।' दाज्यू, जैकब की बात में दमदम-बमबम जैसी फुर्ती लग रही है। वह जानते हैं कि अभी तक जितने भी जाँच वाले आए थे वह सब अपने टीए-डीए पर मगन थे। दाज्यू, निपटारा करने के लिये सबकुछ होता रहता है बल। जाँच के कागज फड़वाकर, फाइल दबवाकर, मुंह में लॉलीपॉप ठूंसकर भी रास्ते बदलते जाते हैं। भगवान ही बता सकता है क्या सही है और क्या गलत।

हल्द्वानी में नकली शराब का कारोबार करने वाले बदांयू के सचिन जायसवाल और सतीपुर थाना बरादरी, बरेली के सोनू कश्यपर को पुलिस ने पकड़ा है। रामपुर रोड में किराये के मकान में रहने वाले ये लोग दिन में फास्ट फूड का ठेला लगाते थे और रात कमरे में नकली शराब तैयार करते थे बल। इनके कमरे से भारी मात्रा में उत्तराखण्ड आबकारी की फर्जी स्टीकर के साथ अंग्रेजी-देशी शराब के पव्वे मिले। यहाँ किससे किसकी जाँच करवाई जाए, समझना कठिन है।

दाज्यू, निकाय चुनाव की रंजिश अभी तक चल रही है। रुद्रपुर में हथियारबन्द युवकों ने कार सवार पर जानलेवा हमला कर दिया। रुद्रपुर में ही बीजेपी के एससी मोर्चा मण्डल अध्यक्ष पर भी जानलेवा हमला हो गया। किरायेदारी की लड़ाई में यह सब हुआ है बल। रामनगर में भी निकाय चुनाव की रंजिस पर हमला हुआ है। भाजपा से बगावत कर निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में उतरे नरेन्द्र शर्मा पर हमले के पीछे गहरी शाजिश बताई जा रही है।

कहा कहा गाए, सब गजर-बजर हो रही है। गुण्डई खुली है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आर्तकियों द्वारा 26 पर्यटकों की हत्या के बाद से हम लोग शोक में थे और आर्तकियों के सफाये को लेकर नारे लगा रहे थे तभी पता चला पिथौरागढ़ मुख्यालय में एक 19 वर्षीय बालिका के साथ दुष्कर्म हो गया। बालिका ने हिम्मत कर पुलिस को इसकी सूचना दी कि उसे होटल ले जाकर जबरदस्ती की गई। आरोपी को पुलिस ने पकड़ लिया। दाज्यू, आखिर इतनी कुकरयोव क्यों होने लगी है। बाहर-भीतर के इन आर्तकियों का सफाया होना चाहिये।

दाज्यू, डीएम कई बार कह चुके हैं कि पूर्णागिरी मेले में अवेध वसूली करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। साहब को कौन समझाए की खनन और यात्रियों की सरासार से ही टनकपुर में कारोबार हरा हो रहा है। पार्किंग शुल्क नाम से लेकर सजावट व कई तरह के जोड़-जन्तर दाल-रोटी के लिये हो चुके हैं। होती रहे जाँच-पड़ताल। निपटारा करने वाले आपस में करते रहे हैं। दाज्यू, हल्द्वानी के बनभूलपुरा में कोल्ड ड्रिंक की अवैध फैक्ट्री सील करके प्रशासन गाल बजा रहा है। उसे क्या पता वैध-अवैध की बाजार कितनी लम्बी है। इस पड़ताल में धुंआ ही धुंआ निकलता है। भगवान सबकी भली करे। लघु कुटीर उद्योग और स्वरोजगार सबकुछ है...

-तुम्हारा भुली झकरुवा

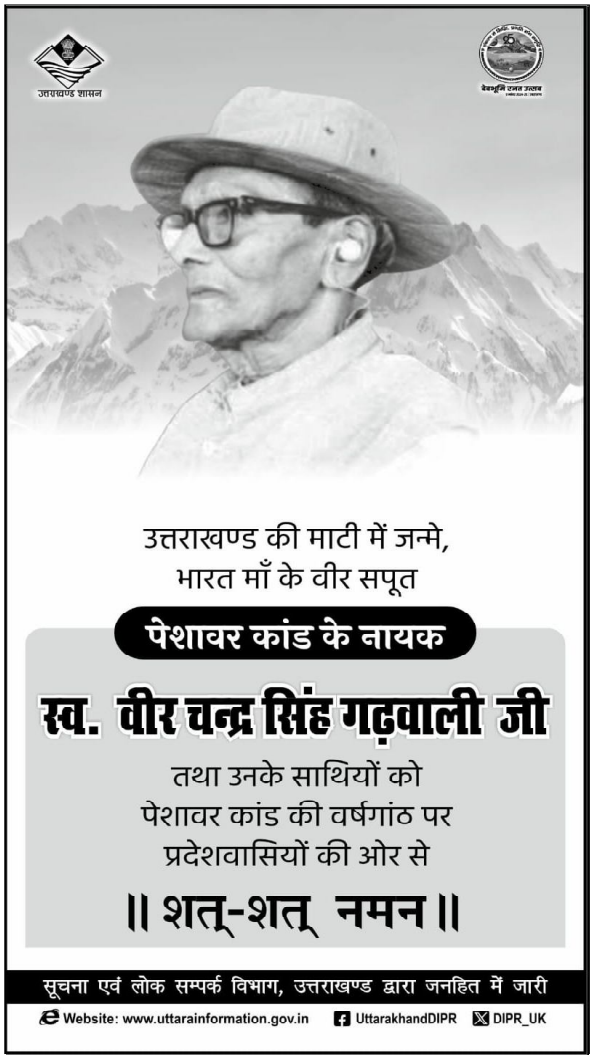

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गोष्ठी गजेन्द्र सिंह पांगती के साहित्य पर चर्चा

हल्द्वानी। किताबों की बात, कवियों की बात, साहित्यकारों, इतिहासकारों की बात, रचना कर्मियों की बात को लेकर जिन लोगों द्वारा बराबर समाज में प्रयास किया जा रहा है वह सराहनीय है। आयोजनों को लेकर सतर्क और सक्रिय लोगों का प्रयास है कि युवा पीढ़ी उनसे जुड़े। पिछले दो साल में नये तरीके से किताब कौतिक नाम से अभियान चलाए जाने लगे हैं, कुछ पुस्तकालयों को भी खोला गया है। गोष्ठी के द्वारा इस रुचि के लोगों को जोड़ने का प्रयत्न जारी है।

इस क्रम में क्रिएटिव उत्तराखण्ड, म्योर पहाड़ संस्था की ओर से 'हिमालय का कथानक' विषय पर आयोजन किया गया। इसमें गजेन्द्र सिंह पांगती के साहित्य पर मुख्य बातचीज हुई। गोष्ठी जोहार मिलन केन्द्र के सभागार में हुई जिसके मुख्य अतिथि अधीनस्थ चयन आयोग उत्तराखण्ड के अध्यक्ष गणेश सिंह मर्तोलिया थे। उन्होंने पांगती जी के साहित्य और संस्कृतति का प्रतीक बताया। प्रधान आयकर आयुक्त नरेन्द्र सिंह जंगपांगी और भूपेन्द्र सिंह पांगती ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए रचनाधर्म को समाज से जोड़ने की प्रक्रिया बताया।

गोष्ठी में हरीश चन्द्र सिंह धर्मशक्तु, डॉ. प्रयाग जोशी, देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तु, प्रभात उप्रेती, हयात सिंह रावत, दयाल पाण्डे, प्रयाग रावत ने गजेन्द्र सिंह पांगती का अभिनन्द करते हुए सम्मान पत्र सौंपा। कार्यक्रम का संचालन भगवती पनेरू द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में नीरज पांगती द्वारा गजेन्द्र सिंह पांगती की साहित्यिक यात्रा को लेकर साक्षात्कार किया। इस सवाल-जवाब में लेखक गजेन्द्र सिंह ने कहा कि साहित्य दिल से लिखा जाता है और इतिहास दिमाग से। उन्होंने अपने साहित्य को दिल से लिखा है।

इस अवसर पर प्रेम सिंह जंगपांगी, रिस्की पाठक, हेम पन्त, कैलाश सिंह धर्मशक्तु, नरेन्द्र सिंह टोलिया, नरेन्द्र बंगारी, मुकेश कोहली, जगमोहन रौतेला मौजूद थे।

कबेल ऑल उ दीन

गजे ऑल, कबेत ऑल उ दीन,
जब ज्यार मा होल चनमनाट,
गों घरन मा होल चरमनाट,
बोलॉल आबन सौकि बोलि,
बचौंल भल रिवाज,
छारूँ गोट रिवाज,
फिर बसूंल घेरिब्यर रोन,
आज घालुल आन,
भूलि सिखुल सौकि बोलीक बारीकी,
आम बाब सुनौल कातथ,
नानतिन जानुल आबन इतिहास,
समजुल आबन संस्कृति,
गजे औल, फिर औल उ दीन,
जब इज्जत होल रिस्तक,
नि रोल गरीब अमीरक भेद,
समाज सेवा मा अमीर लैल धन,
गरीब लैल मन,
जब मिलुल तन, मन, धन एक दाकार,
तब सम्पन्न होल सौक,
बिकसित होल बोलि भासा,
सुचिता ऑल संस्कृति मा,
औल गजे औल, कबेत औल उ दीन।
(गोष्ठी से एक घण्टे पूर्व गजेन्द्र सिंह पांगती द्वारा लिखी गई कविता, जो उन्होंने सुनाई।)

ज्योतिष की बातें- 227

7 मई 2025 को बुध मेष राशि में प्रवेश करेगा। किसी अन्य ग्रह की शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं है अत: बुध सामान्यत: शुभ फलदायी होगा। फलदीपिका के अनुसार बुध दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है। अत: अगले 16 दिन बुध बुद्धि, वाणिज्य व्यवसाय, साहित्य, लेखन आदि अपने कारक विषयों में मीन, मकर, वृश्चिक, कन्या, कर्क और मिथुन राशि के जातकों को भुलफल प्रदान करेगा।

सीता नवमी- वैशाख शुक्ल नवमी मध्यान्ह व्यापिनी तिथि में सीता नवमी का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार सोमवार 5 मई 2025 को सीता नवमी का पर्व उत्साह पूर्वक मनाया जाएगा। इस दिन माता सीता का शोडषोपचार पूजन कर सीता जी के जन्म का प्रसंग श्रवण करना चाहिए और जानकीस्तोत्रम् आदि का पाठ करना चाहिए।

नृसिंह चतुर्दशी- वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी सूर्यास्त कालीन तिथि में नृसिंह जयन्ती मनाई जाती है अत: रविवार 11 मई 2025 को भगवान विष्णु के चौथे अवतार भगवान नृसिंह की जयन्ती उल्लास पूर्व मनाई जाएगी।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

अब यादें शेष : जगदीश चन्द्र पुनेड़ा

पिथौरागढ़ जिला मुख्यालय के वरिष्ठ कलाकार और व्यवसायी जगदीश चन्द्र पुनेड़ा का 22 अप्रैल 2025 को असमय निधन हो गया। रामलीला के मझे हुए कलाकारों के अलावा वह सामाजिक गतिविधियों में हमेशा सक्रिय रहते थे। होली की बैठक हो या किसी भी तरह के उत्सव पुनेड़ा जी का योगदान सक्रिय रहा है। ईश्वरीय देन भी थी कि उनकी मुखाकृति देख उन्हें 'भगवान' भी कहते थे। भगवान श्रीराम की तरह अट्टाहस चेहरा सबको याद रहेगा। जबकि वह मृदुभाषी के अलावा हर प्रकार से व्यवहार कुशल थे। पन्तनगर बीज भण्डार नाम से उनका प्रतिष्ठान मिलने-जुलने वालों का अड्डा रहा है। पिघलता हिमालय परिवार अपने वरिष्ठ स्व. पुनेड़ा के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

गंगा राणा-अनियास परिणय सूत्र में बंधे

मुनस्यारी। सरमोली शंखाधुरा के रहने वाले गंगा राणा का फ्रांस की अनियास परिणय सूत्र में बंध चुके हैं। सरमोली में धूमधाम से विवाह सम्पन्न हुआ।

कुमाउंनी परम्परानुसार हुए विवाह में हिस्सेदारी के लिये बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। शंखाधुरा स्थित 'मर्तोलिया लॉज' के मैनेजर गंगा भाई अपनी बात व्यवहार से सभी के चहेते रहे हैं। 2019 में फ्रांस से मुनस्यारी घूमने आई युवती अनियास की भेंट गंगा राणा से हुई। उसे गंगा का सीधा-सादा जीवन भा गया। यहीं से इस युगल ने आगे की जीवन की राह चुनी।

विवाह समारोह में फ्रांस से आये मेहमान भारतीय परिधानों व बहू अनियास भी परम्परागत वस्त्राभूषण में दिखाई दी। गंगा भाई के परिणय सूत्र बन्धन के लिये पिघलता हिमालय परिवार हार्दिक बधाई देता है। वह आने वाले समय में अपनी सादगी से खूब आगे बढ़ें।

आनन्द सिंह जंगपांगी सम्मानित हुए

हल्द्वानी। अर्थ एवं संख्याधिकारी आनन्द सिंह जंगपांगी को उनके कार्यों के लिये भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया गया है। सरकार द्वारा सौंपे गये कार्यों को कुशलतापूर्वक निर्वहन करने और अपनी मार्गदर्शन के लिये उन्हें निदेशक प्रकाश चन्द्र आईएएस की ओर से प्रशंसा पत्र दिया गया है। जिसमें सराहना करते हुए कहा है कि श्री जंगपांगी ने उत्तराखण्ड राज्य गठन के उपरान्त राज्य में प्रथम बार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित चिन्तन शिविर में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। इन्हें सौंपे गये कार्य वास्तव में क्षमताओं से अधि

आईजी नपलच्याल ने किया निरीक्षण

उत्तरकाशी। पुलिस महानिरीक्षक व नोडल अधिकारी गंगोत्री धाम नारायण सिंह नपलच्याल ने उत्तरकाशी पहुंचकर गंगोत्री मार्ग का निरीक्षण किया। उन्होंने गंगोत्री धाम मार्ग का देहरादून से नगुण तथा नगुण से उत्तरकाशी, हीना तक स्थलीय निरीक्षण करते हुए यात्रा रूट पर मुख्य पड़ावों व दुर्घटना सम्भावित सम्वेदनशील स्थलों का जायजा लिया।

उन्होंने यात्रा रूट व धाम पर पड़ने वाले पर्यटन पुलिस चौकियों, बैरियर, ड्यूटी प्वांइट आदि का निरीक्षण कर वहाँ पर कर्मचारियों के रहने-खाने की व्यवस्था तथा मूलभूत सुविधाओं का जायजा भी लिया और जरूरी सामग्री उपलब्ध करवाने के निर्देश दिये। आईजी ने पुलिस अधिकारियों की बैठक में दुर्घटन सम्भावित सम्वेदनशील स्थलों पर आवश्यक सुरक्षात्मक उपाय के साथ-साथ अतिरिक्त पुलिस बल नियुक्त करने को कहा। ऐसे स्थलों पर तैनात पुलिस कर्मियों को वायरलेस सेट सहित रहने के निर्देश दिये। मुख्य पड़ावों पर सीसीटीवी कैमरे की स्थित चैक करने को कहा। इस दौरान पुलिस अधीक्षक सरिता डोबाल, पुलिस उपाधीक्षक जनक सिंह पंवार, प्रभारी निरीक्षक भावना कैंथोला भी थे।

पूर्णागिरी मेले की की धूम लेकिन दिखावा ज्यादा

टनकपुर। उत्तर भारत का प्रसिद्ध पूर्णागिरी मेला अपने चरम पर पहुँच चुका है और यात्री निरन्तर आ रहे हैं लेकिन स्थानीय तैयारियों के हिसाब से देखें तो इसमें दिखावा ज्यादा है। मुख्य पड़ाव टनकपुर शहर में दिखाने के लिये बहुत सुविधाओं का ढिंढारो पीटा गया लेकिन स्वागत के लिये सड़क की एक ओर विद्युत माला लटकी हुई हैं। यात्री अपने आप से अपनी तैयारी पर मेला में हैं।

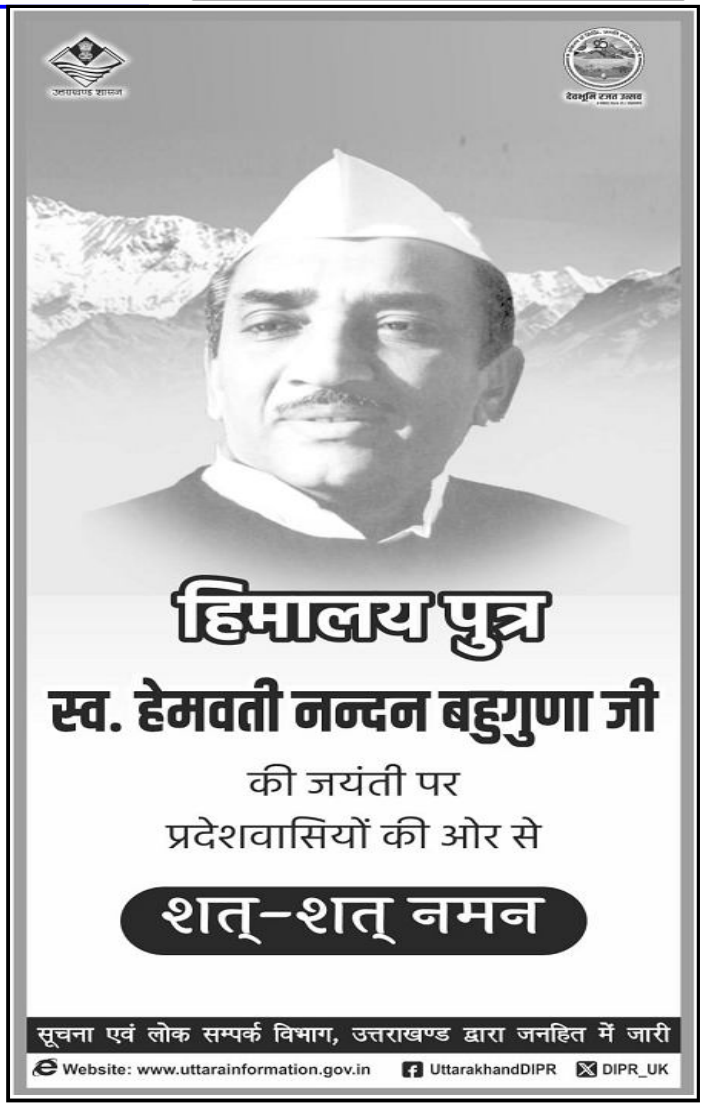

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

वैद्यनाथन कमेटी के सुझाव लागू करो

काशीपुर। सहकारी समितियों के कर्मचारियों ने एसडीएम कार्यालय में ज्ञापन सौंपते हुए सहकारी समिति अधिनियम में प्राप्त अधिकारों का दुरुपयोग न करने और प्रदेश में सहकारी आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिये बहुप्रतीक्षित वैद्यनाथन कमेटी के सुझावों को लागू करने की मांग की।

डामरीकरण की जांच समिति करेगी

अल्मोड़ा। जागेश्वर विधानसभा की सड़कों के डामरीकरण की जांच अब समिति करेगी। डीएम आलोक कुमार पाण्डे ने जांच कमेटी में अधीक्षण अभियन्ता लोक निर्माण विभाग अध्यक्ष, अधिशासी अभियन्ता ग्रामीण निर्माण विभाग और अधिशासी अभियन्ता लोनिवि को सदस्य नामित किया है। ये दन्या-आरा सलपड़, जैती-पीपली और जैती-भनोली मोटर मार्ग को जांचेंगे।

भवन मरम्मत न होने से दांतू में रोष

धारचूला। प्राथमिक विद्यालय दांतू की मरम्मत 6 माह बाद भी न होने पर लोगों में रोष है। उनका कहना है कि मरम्मत कार्य न होने से 12 विद्यार्थी आधा किमी दूर अन्य विद्यालय जा रहे हैं। स्कूल में 12 लाख रुपये से कार्य शुरु हुआ था और विद्यार्थी दूसरे स्कूल में भेजे गये लेकिन यह कार्य अभी तक भी पूरा नहीं हो पाया है।

गोरलचौड़ मैदान को संवारा जाए

चम्पावत। जिला मुख्यालय का गोरलचौड़ मैदान किसी भी बड़े आयोजन के लिये सुलभ है लेकिन इसकी बदहाली देखी जा रही है। शासन-प्रशासन सबकी नजर इसपर है लेकिन गोरलचौड़ पर कामकाज निपटाने के बाद इसे यूं ही छोड़ दिया जाता है। क्षेत्रवासियों ने इस मैदान के सुन्दरीकरण के साथ संवारने की मांग की है। इससे पर्यटक भी बढ़ेगा।

मलिक सहित 19 को राहत नहीं मिली

हल्द्वानी। वनभूलपुरा हिंसा मामले में मुख्य आरोपी अब्दुल मलिक समेत 19 लोगों को हाईकोर्ट से कोई राहत नहीं मिली है। याचिका की सुनवाई के बाद कोर्ट ने उन्हें छूट न देकर अपगी तारीख तय की। भड़की हिंसा में अब्दुल म मलिक सहित अन्य के खिलाफ चार मुकदमे दर्ज हुए थे। इसमें से एक मामला यह भी कि मलिक ने कूटरचित झूठे शपथपत्र के आधार पर राजकीय भूमि खुर्द-बुर्द की और नजूल भूमि पर कब्जा कर प्लाटिंग व अवैध निर्माण कर उसे बेचा है। मलिक को इस मामले में जमानत मिल चुकी है। हिंसा फैलाने के मामले में वरिष्ठ न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी एवं न्यायमूर्ति पंकज पुरोहित के समक्ष सुनवाई हुई। इस दौरान राज्य सरकार की ओर से जमानत प्रार्थना पत्र का विरोध किया गया।

टनकपुर से जाएंगे कैलास मानसरोवर यात्री, 30 जून को पहला दल रवाना

हल्द्वानी। कोरोना काल के कारण 2000 से रुकी कैलास मानसरोवर यात्रा लिपुलेख दर्रे से होकर संचालित होनी है। नई दिल्ली स्थित विदेश मंत्रालय में इसका निर्णय होते ही यह भी तय हुआ है कि कुमाऊँ मण्डल विकास निगम द्वारा संचालित यह यात्रा काठगोदाम के बजाए टनकपुर से होकर चलेगी यात्री दिल्ली से चलकर नए रूट टनकपुर पहुँचेंगे और वाया चम्पावत होते हुए पिथौरागढ़। वापसी में जरूर चौकोड़ी से अल्मोड़ा होते हुए जाएंगे। बताया गया है कि कुल 250 यात्रियों को लिपुलेख दर्रे से मानसरोवर भेजा जाएगा।

पुरातन काल से जारी इस धार्मिक यात्रा की मान्यता है। 1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद यात्रा बन्द की गई थी जिसें दोनों देशों की सहमति से 1981 में फिर शुरू किया गया। उत्तराखण्ड गठन के बाद 2000 से 2019 तक 12646 यात्री तिब्बत स्थित कैलास मानसरोवर भेजे गये। फिर कोरोना काल में यात्रा संचालन रुक गया था। इस बार फिर से इसका संचालन होना है।

कांग्रेस को चार्ज कर गये हरीश रावत

चम्पावत। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत अपने चम्पावत दौरे में सुस्त दिखाई दे रही कांग्रेस को जार्च कर गये। इससे पहले प्रदेश अध्यक्ष यशपाल आर्य ही इस जिले में सम्पर्क में थे और कहा जा रहा था कि हरदा दूर क्यों? लेकिन हरीश रावत ने अपने दौरे में कार्यकर्ताओं में जोश भरा है और गोरलचौड़ जाकर गोलज्यू दरबार में पूजा-अर्चना की। उन्होंने मन्दिर में भाजपा के खिलाफ न्याय की अर्जी लगाई और कहा कि भाजपा सरकार की ओर से 2017 चुनाव के दौरान उनके खिलाफ जुमे की छुट्टी और 2022 के चुनाव के दौरान मुस्लिम यूनिवर्सिटी खोलने के बाबत अफवाह फैलाई गई। भाजपा का कोई भी नेता इसका प्रमाण दे दे तो मै। राजनीति करना छोड़ दूंगा। श्री रावत ने भाजपा सरकार के कार्यों को झूठ का पुलिन्दा बताते हुए कहा कि सारे कार्य हवाई हो रहे हैं। चम्पावत में पिछले तीन साल में विकास कार्य नहीं हो रहे हैं।

पूर्व सीएम के चम्पावत आने पर कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया और बराबर सम्पर्क में रहने को कहा। इस मौके पर पूर्व विधायक होमेश खर्कवाल, पूरन कठायत, निर्मला गहतोड़ी, डॉ. विनोद जोशी, भुवन चौबे आदि थे।

अवैध मजार ध्वस्त, राजनीति शुरु

रुद्रपुर। नेशनल हाईवे पर इन्दिरा चौक स्थित सौ साल पुरानी बताई जाने वाली सैय्यद मासूम शाह मियां व सज्जाद मियां की कथित अवैध मजार को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और पुलिस-प्रशासन ने विगत दिवस ध्वस्त कर दिया था, इसके बाद से रुद्रपुर में राजनीति तेज हो गई है। बयानबाजी करते नेता अपने तर्क दे रहे हैं। मजार के मैनेजर सैय्यद हसीन मियां कहा कहना है कि मजार में 1931 में उर्स प्रारम्भ हुआ था। 1963 में माजर को वक्फ बोर्ड में रजिस्टर्ड किया था। जिसके दस्तावेज उनके पास हैं। विधायक शिव अरोरा कहते हैं कि महार हटाना चुनौती थी लेकिन धामी सरकार ने लैंड जिहाद के खिलाफ अभियान चताया है। महापौर विकास शर्मा कह रहे हैं कि हाईवे चौड़ीकरण में ऐसा होता ही है। पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल कहते हैं कि हाईवे पर कभी भी धार्मिक स्थल नहीं होते हैं। कांग्रेस नेता सीपी शर्मा इसे सरकारी जिद बता रहे

राईआगर में व्यू प्वाइंट बनेगा आकर्षण

बेरीनाग। राईआगर में पर्यटल स्थल विकसित कर व्यू प्वाइंट बनने से यह आकर्षण बनेगा और पर्यटकों की संख्या में इजाफा होगा।

असल में डीएम विनोद गोस्वामी ने अधिकारियों के साथ एक बैठक में आदि कैलाश और ऊं पर्वत दर्शन के लिये यात्रियों की बढ़ती सम्भावना को देखते हुए उनकी सुविधाओं के लिये इलेक्ट्रिक वाहनों को चार्ज करने के लिये चार्जिंग स्टेशन बनाए जाने के अलावा राईआगर की चर्चा की।

उन्होंने बताया कि पर्यटकों और यात्रियों के इलेक्ट्रिक वाहनों को चार्ज करने के लिये जिला मुख्यालय, चौकोड़ी, पाताल भुवनेश्वर, धारचूला के साथ ही थल मुनस्यारी के बची सभी पेट्रोल पम्पों पर चार्जिंग प्वाइंट बनायए जाएंगे। उन्होंने राईआगर के पास पर्यटक स्थला विकसित कर हिमालय दर्शन के लिये व्यू प्वाइंट बनाने के निर्देश दिए। इसके अलावा हाट कालिका मन्दिर परिसर में सफाई अभियान चलाने, निकाय क्षेत्रों में अतिक्रमण हटाने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिए। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारी शामिल थे।

जागेश्वर में ऐरावत गुफा विकसित होगी

अल्मोड़ा। जिलाधिकारी आलोक कृष्ण पाण्डे ने जागेश्वर के निकट स्थित ऐरावत गुफा का स्थलीय निरीक्षण कर इसके पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने करने के निर्देश दिए।

डीएम ने कहा कि ऐरावत को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किये जाने की अपार सम्भावनाएं हैं। उन्होंने निर्देश दिए कि गुफा तक पहुंच मार्ग, स्थल में सौन्दर्यीकरण के कार्य और ध्यान स्थलों के लिये डिजाइन तैयार किया जाए। इस स्थल को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किए जाने से जागेश्वर आने वाले श्रद्धालुओं को आकर्षित किया जा सकेगा। वहीं क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या में इजाफा होगा और क्षेत्रवासियों की आजीविका बढ़ाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि जागेश्वर एवं आसपास के क्षेत्रों को विकसित किए जाने के लये सीएम लगातार प्रयासरत हैं। निर्देश दिये कि नवीन सम्भावनाएं तलाशी जाएं।

कुविवि सभा के 15 सदस्य निर्वाचित

नैनीताल। कुमाऊँ विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय सभा के 15 निर्वाचित सदस्यों की घोषणा हो चुकी है। कुल सचिव डॉ. एम.एस. मन्द्रवाल ने सूची जारी करते हुए बताया कि 15 प्रतिनिधियों के लिये 897 मतदाताओं में से 740 ने वोट दिया।

निर्वाचित सदस्यों में अनिल कुमार, अरविन्द सिंह पडियार, बहादुर सिंह पाल, बालकृष्ण सांगुड़ी, डॉ. बीएस जीना, गणेश चम्याल, हरीश सिंह धामी, जितेन्द्र कुमार भट्ट, केवल सती, प्रमोद सिंह बिष्ट, पृथ्वी पाल सिंह , पवन सिंह, डॉ. सुरेश डालाकोटी, वीरेन्द्र जोशी, युगल किशोर मठपाल शामिल रहे।

सदस्यों का कार्यकाला विवि सभा की पहली बैठक से तीन वर्ष तक रहेगा। कुलपति प्रो. डी.एस.रावत ने कहा कि सीनेट के निर्वाचित सदस्य विवि में आय व्यय समेत अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को लेकर निर्णय लेंगे। विवि में कार्य परिषद (ईसी) के लिए इन्हीं 15 सदस्यों में से चार सदस्यों को मतदान के बाद चुना जाएगा।

माइग्रेसन में जाने वालों को सुविधा दो ताकि सीमा सुरक्षा करें

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति ने शासन-प्रशासन से माइग्रेशन पर जाने वालों को सुविधा देने को कहा है ताकि वह अपने मूल घर जाकर हिफालत कर सकें। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने शौका केन्द्रीय समिति सहित अन्य को भी इसकी सूचना दी है ताकि इस महत्वपूर्ण मामले पर सभी चिन्ता करें और चैतन्य हों। श्री धर्मशक्तू का कहना है कि माइग्रेसन की जो व्यवस्था सदियों से चली आ रही है उसे वर्तमान समयानुसार सुविधा दी जानी चाहिये। सीमा में रहने वाले लोग इससे सीमा के मजबूत प्रहरी की भूमिका में रहेंगे। सीमा सुरक्षा के लिये अपने नागरिकों का विशेष ध्यान रखना चाहिये। समिति का इस सम्बन्ध में कहना है कि पैदल, मोटर सड़क में होने वाले अवरोधको दूर किया जाए। जिससे माइग्रेशन परिवार समय पूर्व अपने गंतव्य जा सकें।

परिक्रमा

सोमेश्वर में मंत्री ने किया लोकार्पण

सोमेश्वर। कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने विधानसभा क्षेत्र में 8 करोड़ से ज्यादा के विकास कार्यों की नींव रखी। इसके अलावा कई परियोजनाओं का लोकार्पण किया। जिला योजना अन्तर्गत चौबटिया नागपानी देहोली सिवाली रोड का लोकार्पण करते हुए कहा कि इससे मार्ग से आवागमन सुगम होगा। उन्होंने चौबटिया कुनलाखेत बमस्यूं मोटर मार्ग का पुनः निर्माण कार्य का शिलान्यास भी किया।

अवैध कॉलोनियां ध्वस्तीकरण जारी

रुद्रपुर। जिला विकास प्राधिकरण की ओर से जिले में अवैध कॉलोनियों का ध्वतीकरण अभियान तेजी से चल रहा है। किच्छा और काशीपुर में 5 अवैध कॉलोनियों को बुलडोजर लगाकर तोड़ दिया गया। प्राधिकरण की टीम ने पुलिस बल के साथ पुलभट्टा से लेकर काशीपुर तक बड़ा अभियान चलाया। चेतावनी दी है कि फिर से इस पर निर्माण न हो।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सप्तर्षि जो.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

विचारों के प्रवाह में, बौद्धिक योगदान में अपना नाम जरूर कमाया था। तो क्यों न इन्हीं दो तार्किक आधारों पर अपने सप्तर्षियों के पास तक पहुँचने की एक उम्दा कोशिश की जाए?

सप्तर्षि शब्द और इसके आभामण्डल के तले पनपी महनीय सप्तर्षि बवधारणा का विकास महाभारत के बाद पुराणों के काल में हुआ तो जाहिर है कि इसका आधार काल इससे काफी पहले का रहा होगा। कौन सा रहा होगा इस सवाल के जवाब में फिर से ऋगवेद हमारी सहायता करता है। अभी हमने बताया था कि ऋग्वेद में करीब एक हजार सूक्त हैं, करीब दस हजार मन्त्र हैं (चारों वेदों में करीब बीस हजार हैं) और इन मन्त्रों के रचियता कवियों को हम ऋषि कहते हैं। पर यह नहीं बताया था कि वे ऋषि कौन हैं। आजवह बताने का वक्त है। बाकी तीन वेदों के मन्त्रों की तरह ऋग्वेद के मन्त्रों की रचना में भी अनेकानेक ऋषियों का योगदान रहा है। पर इनमें भी सात ऋषि ऐसे हैं जिनके कुलों में मन्त्र रचयिता ऋषियों की एक लम्बी परम्परा रही। ऋग्वेद के सूक्त दस मण्डलों (कह सकते हैं कि अध्यायों) में संग्रहीत हैं और इनमें दो से सात यानी छह मण्डल ऐसे हैं जिन्हें हम परम्परा में वंशमण्डल कहते हैं क्योंकि इनमें छह ऋषिकुलों के ऋषियों के मन्त्र इकट्ठा कर दिए गए हैं। एक बार नाम जान लिये जाएं तो तर्क का सिलसिला आगे बढ़े। मण्डल संख्या दो- गृत्समद वंश या ऋषिकुल, तीन- विश्वामित्र, चार- वामदेव, पाँच- अत्रि, छह- भरद्वाज, सात- वसिष्ठ। इस तरह छह नाम से साफ साफ मिल जाते हैं। इस नामावली के सन्दर्भ में दो महत्वपूर्ण सूचनाएं हमारे पाठकों को पता रहनी चाहिए। एक कि इसमें गृत्समद ऋषि ने अपना गोत्र बदलकर शौनक कर लिया था और इसलिए आगे अब इन्हें शौनक कहना इतिहास की दृष्टि से ज्यादा स्वाभाविक रहेगा। दूसरी महत्वपूर्ण सूचना यह है कि इन छह कुलों के अलावा एक और कुल भी था, कण्वकुल जिसके अनेक ऋषियों ने पीढ़ी दर पीढ़ी मन्त्र रचे और वे सभी मन्त्र ऋगवेद में हैं। फिर क्यों नहीं वेदव्यास ने ऋगवेद के मन्त्रों का संकलन (मौजूदा) तैयार करते समय इनके मन्त्रों को कण्वकुल का एक पृथक वंशमण्डल देने का वैसा गौरव दिया जैसा शेष छह कुलों को दिया? जवाब आसान नहीं। अनुमान ही लगाया जा सकता है कि चूंकि कण्वकुल के अनेक ऋषियों ने अपने मन्त्र कुछ दानदाताओं की प्रशंसा में बना डाले इसलिए वेदव्यास ने इन्हें पसन्द न कर, काव्यकर्म के विरुद्ध मानकर, पृथक वंशमण्डल का गौरव न दिया हो। कण्वों के इस तरह के मन्त्रों को 'नाराशंसी' कहते हैं और दाता राजाओं की प्रशंसा में होने के कारण ये मन्त्र पुराने राजाओं की प्रशंसा में होने के कारण ये मन्त्र पुराने राजाओं के बारे में हमारी जानकारी बढ़ाने में खासी सहायता करते हैं। पृथक वंशमण्डल बेशक न मिला हो, पर कण्वकुल तो है।

तो सात ऋषिकुल सामने आ गए- वसिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, कण्व, भरद्वाज, वामदेव और शौनक। इनका कालक्रम भी करीब करीब इस शृंखला में है। जिस ग्रन्थ का नाम ऋगवेद है, जो ग्रन्थ हमारे देश की बौद्धिक प्रखरता का पर्यायवाची और दुनियाभर में हमारी पहचान का अभूतपूर्व प्रतीत बना हुआ हो और जिसके प्रति विद्वानों का आकर्षण लगातार बढ़ता जा रहा हो और पढ़ने वालों की मांग बढ़ती ही जा रही हो उस ऋगवेद के मन्त्रों का अधिकतम भाग जिन ऋषिकुलों ने पीढ़ी दर पीढ़ी रचा हो, उन सात कुलों का कितना अद्वितीय सम्मान इस देश के लोगों के बच रहा होगा, क्या इसकी कल्पना कर सकते हैं? कर सकते हैं, इसलिए जाहिर है कि ये सात ऋषिकुल, ये सप्त ऋषि हमारी विचार धरोहर के पुरोधा होने के कारण हमारी स्मृति में अमर हो गए और बाद में कभी व्यावसायिक तो कभी राजनीतिक कारणों से सप्तर्षियों के नामों में अवधारणा में फर्क आता गया हो तो कोई क्या कर सकता है? पर अगर तर्क और इतिहास की सीढ़ी चढ़ेंगे तो इस अवधारणा के शिखर पर आप इन्ळीं सात ऋषियों को बैठा पाएंगे। इसलिए अचरज नहीं कि किसी भी सप्तर्षि गणना में इनमें से अधिकांश नाम, कभी चार कभी पांच तो कभी छह नाम में से आते हैं और इनमें से हरेक का सप्तर्षित्व आज तक सुरक्षित है।

फिर इनमें से हर कुल के प्रवर्तक ने या उसके परवर्ती ने देश की सभ्यता के विकास में अपना अनूठा योगदान किया है। आद्यवसिष्ठ ने राजसत्ता पर अंकुश का विचार दिया तो मैत्रावरुण वसिष्ठ ने सरस्वती नदी के किनारे सौ सूक्त रचकर नया इतिहास बनाया जिसका अनुकरण करते भविष्य में किसी से नहीं बना। विश्वामित्र ने इस देश को ऋचा बनाने की विद्या दी और गायत्री मन्त्र की रचना की जो भारत के हृदय में जिह्वा पर हजारों सालों से आज तक अनवरत निवास कर रहा है। अत्र ऋषि ने इस देश में कृषि के विकास में पृथु और ऋषभ की तहत अद्भुत योगदान किदया था अत्रि लोग ही सिन्धु पार कर ईरान (आज का) चले गये थे जहाँ उन्होंने यज्ञ का प्रचार किया। इस देश के सबसे बड़े यज्ञ सोमयज्ञ को कण्वों ने व्यवस्थित किया तो भारद्वाजों में से एक भरद्वाज विदथ ने दुष्यन्त पुत्र भरत का उत्तराधिकारी बन राजकाज करते हुए भी मन्त्र रचना जारी रखी। वामदेव ने इस देश को सामगान (अर्थात संगीत) दिया तो शौनक ने दस हजार विद्यार्थियोंके गुरुकुल को चलाकर कुलपति का विलक्षण सम्मान हासिल किया और किसी भी ऋषि ने ऐसा सम्मान पहली बार हासिल किया।

फिर से बताएं तो वसिष्ठ, विश्वामित्र अत्रि कण्व, भरद्वाज, वामदेव और शौनक- ये हैं वे सात ऋषि, सप्तर्षि, जिन्होंने इस देश की मेधा को आकाश के तारामण्डल में बिठाकर एक ऐसा अमरत्व दे दिया कि सप्तर्षि शब्द सुनते ही हमारा हृदय खुद किसी अपूर्व मनोभाव से भर जाता है। बाद में जो अपने अपने कारणों से अपने अपने नाम जोड़ने की होड़ लगी तो यह सप्तर्षि के महत्व को ही दिखाता है। पर सप्तर्षि तो सप्तर्षि हैं। हमें उनके नाम तो मालेम रहने ही चाहिए, यह मालूम भी रहना चाहिए कि वे सप्तर्षि क्यों हैं। इन्हें भूल सकते हैं भला?

(साभार नवभारत टाइम्स)

ईमानदार लोगों.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

मच्छरों के प्रकोप के भय से लोग टनकपुर नहीं आ पाते थे।

1935 में जन्मे कैप्टन साहब बताते हैं कि 1951 में चार दिन की पैदल यात्रा कर वह टनकपुर पहुँचे। घने जंगल और जानवरों के भय से तब लोग समूह में चलते थे। पिथौरागढ़ से जिस पैदल मार्ग से आना होता था उसे अस्कोट मार्ग कहते हैं। तब टनकपुर में दो-चार होटल थे जिसमें अग्रवाल जी का मेरठ होटल प्रसिद्ध था। इसमें ज्यादातर फौजी रुका करते थे। लोग इस शहर की सीमेंट रोड नाम से पहचानी जाने वाली जगह पर खुले में चारपाई डालकर सोते थे। होटल वाले भी कोई लिखत-पढ़त नहीं करते बल्कि सबकुछ ईमानदारी और विश्वास पर था। उन दिनों शेर-बाघ के आतंक के किस्से बहुत सुनने को मिलते थे और जब प्रसिद्ध शिकारी और जंगल प्रेमी जिम कार्बेट ने यहाँ आकर बाघ मारा तब से जानवरों का आतंक कम हुआ। पहाड़ से आने वाले यात्री अपने बैलों व अन्य जानवरों के साथ टनकपुर आते थे। टनपुर में ही कई स्थानों का नाम 'गोठ' के नाम पर है, जहाँ पर लोग अपने जानवरों को रखते थे। पूर्णागिरी मेला जैसी धूम तब नहीं थी। जाड़ों में लोगों का आना भर होता था और पहाड़ को लौट जाते थे। सीमान्त क्षेत्र के शौका व्यापारी भी अपने पशुओं के साथ भाबर तक आते थे। अपने बचपन के दिनों के टनकपुर और वर्तमान के टनकपुर की तुलना करते हुए चन्द जी बताते हैं कि पहले साधन नहीं थे, अब टनकपुर विस्तार पा चुका है, यहाँ बसने वालों की होड़ है। पहाड़ खाली होते जा रहे हैं। बीसाबजेट गाँव में भी गिनती भर के लोग रह गये हैं, जो जहाँ नौकरी-पेशे के लिये गया वहीं का होकर रह गया है। पिथौरागढ़ को तो पहले पिछड़े इलाकों में गिना जाता रहा, ऐसे में वहाँ के युवा फौज के अलावा दूसरा सोचते भी नहीं थे। वर्तमान में तमाम क्षेत्रों में युवा जाने लगे हैं। मिशनरी वालों ने भी लोभ देकर लोगों को धर्म परिवर्तन के लिये लुभाया लेकिन लोग बहकावे में नहीं आए। काली कुमाऊँ का नाम सुनकर अंग्रेज भी भयभीत होते थे, इसी लिये वह मिशनरी के प्रचार में सफल भी नहीं हुए।

वह बताते हैं कि नेपाल सीमा पर खर्क देश में व्यापार चलता था। शौका व्यापारी तिब्बत व्यापार के लिये अपनी यात्रा में दिखते थे और व्यापार के समय कई बार वह अपने बीमार या अपाहिज जानवरों को ग्रामीणों के पास छोड़ जाते थे लेकिन उनकी अगली यात्रा के समय ग्रामीण उनके पशुओं को उपचार से ठीक कर सौंप देते थे। इस प्रकार की ईमानदारी लोगों के बीच थी। व्यापारी गुड़ आदि सामान वगैरह दे जाते थे। आज वह सारे ग्राम वीरान दिखाई देते हैं। तिब्बत व्यापार बन्द होने के बार से तो वह रौनक ही नहीं रही। कैप्टन साहब के पास पुरानी यादों का लम्बा खजाना है। वह आमबाग में संरक्षक के रूप में युवा पीढ़ी के बीच मुस्कुराते रहें यही कामना है।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत
7351285555

कपूर एण्ड संस
संजय कलोनी, मुखानी हल्द्वानी
कपूर इण्टरप्राईजेज
निकट मंगलम बैंकट हॉल, देवलचौड़
रामपुर रोड, कैंची धाम मार्ग हल्द्वानी
9997712279 9837824462

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड,
दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये
सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
फोन सम्पर्क-
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स 05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

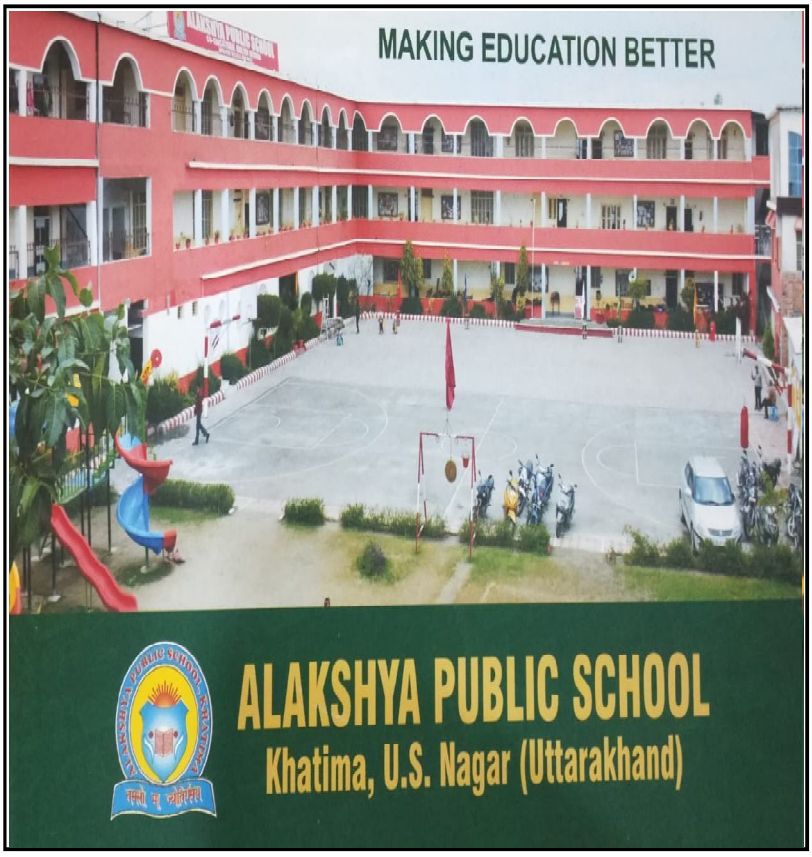

देवभूमि के यात्रा सीजन पर
हार्दिक शुभकानाओं
के साथ-

श्रीमती गीता मर्तोलिया
धाम सिंह मर्तोलिया
श्रीकृष्ण विहार,
बलुटिया गार्डन
मल्ली बमोरी,
हल्द्वानी

डॉ. वाई.एस. धर्मशक्तू
विजयधाम, जोहार नगर
हल्द्वानी

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

बी. एस. मर्तोलिया
गंगोत्री-किशन निवास
बैंक कलोनी,
दोनहरिया
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From
Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)